

► सेमिनार में देशभर से 175 से अधिक छात्र, शोधार्थी, ड्रोन प्रैक्टिशनर हुए शामिल

विकसित भारत के लक्ष्य प्राप्त करने जरूरी है नवाचार आधारित शोध व ड्रोन जैसी तकनीक



● इंदौर/ राज न्यूज नेटवर्क

अनुसंधान नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (एनआरएफ) की ओर से प्रायोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार आधुनिक निर्माण प्रथाओं में जियो सिंथेटिक्स व ड्रोन प्रौद्योगिकियों के उभरते अनुप्रयोग का समापन आईआईटी इंदौर में हुआ। सेमिनार में देशभर से 175 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें छात्र, शोधार्थी, शिक्षाविद, ड्रोन प्रैक्टिशनर व जियोसिंथेटिक्स और अवसंरचना क्षेत्र के पेशेवर शामिल हुए।

सेमिनार का संयुक्त आयोजन आईआईटी इंदौर के सिविल इंजीनियरिंग विभाग, एसआरएम यूनिवर्सिटी (आंध्र प्रदेश) व आईजीएस इंदौर चैप्टर की ओर से किया गया। आयोजन इंटरनेशनल



जियोसिंथेटिक सोसाइटी (इंडिया चैप्टर) और वस्त्र मंत्रालय के सहयोग से संपन्न हुआ, जिसमें टेकफैब इंडिया ने गोल्ड स्पॉन्सर की भूमिका निभाई। मुख्य अतिथि डॉ. महावीर बिदासरिया, चेयरमैन व पूर्व

अध्यक्ष, इंडियन जियोटेक्निकल सोसाइटी ने उद्घाटन किया। उन्होंने सतत, कुशल व भविष्य उन्मुख निर्माण प्रथाओं को सक्षम बनाने में जियोसिंथेटिक्स और ड्रोन प्रौद्योगिकियों की बढ़ती भूमिका पर बात

रॉक्स एंड मिनेरल्स

उद्घाटन का प्रमुख आकर्षण पुस्तक रॉक्स एंड मिनेरल्स: एन इलअस्ट्रेटेड प्रैक्टिकल गाइड का विमोचन रहा, जिसे डॉ. रामु बाड़ीगा व आईआईटी इंदौर के स्नातक विद्यार्थियों द्वारा लिखा गया है। पुस्तक का विमोचन प्रो. विनोद कुमार ने किया। उन्होंने छात्रों की अकादमिक उत्कृष्टता और अनुप्रयोग आधारित सीख में योगदान की सराहना की। अंतिम दिन प्रतिभागियों ने आईआईटी इंदौर के समीप चल रहे टनल निर्माण स्थल का भ्रमण किया, जहां जियोसिंथेटिक्स के अनुप्रयोगों और ड्रोन-सहायता प्राप्त सर्वेक्षण का सजीव प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम के संयोजकों में से एक डॉ. रामु बाड़ीगा, सहायक प्रोफेसर, सिविल इंजीनियरिंग विभाग, आईआईटी इंदौर ने कहा, अभूतपूर्व सहभागिता और सक्रिय भागीदारी ने आधुनिक निर्माण में जियोसिंथेटिक्स और ड्रोन प्रौद्योगिकियों के एकीकरण की प्रासंगिकता को पुनः स्थापित किया है।

की। उद्योग, शैक्षणिक सहयोग पर बल देते हुए कहा, नवाचार आधारित शोध, कौशल विकास व जियोसिंथेटिक्स और ड्रोन जैसी उन्नत तकनीकों को अपनाना सतत अवसंरचना विकास और विकसित भारत के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अनिवार्य है।

नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए है प्रतिबद्ध

आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास जोशी ने राष्ट्रीय विकास में अंतर्विषयक मंचों की भूमिका पर बात की। कहा, इस प्रकार की राष्ट्रीय स्तर की अकादमिक गतिविधियां शोध को

वास्तविक इंजीनियरिंग समाधानों में परिवर्तित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आईआईटी इंदौर सतत अवसंरचना विकास व विकसित भारत 2047 जैसे राष्ट्रीय लक्ष्यों के समर्थन में नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध है। तीन दिनों के दौरान, आईआईटी, सीएसआईआर प्रयोगशालाओं, विश्वविद्यालयों और उद्योग जगत से आए विशेषज्ञों ने कीनोट व्याख्यान और तकनीकी सत्रों के माध्यम से जियोसिंथेटिक्स के उन्नत अनुप्रयोगों—जैसे सड़कें, नींव व सुदृढ़ीकरण प्रणालियां, ड्रोन आधारित सर्वेक्षण, निगरानी, एआई विश्लेषण और संरचनात्मक स्वास्थ्य मूल्यांकन पर अपने विचार साझा किए।